(करबद्ध प्रार्थना कृपया पत्रिका को पैरों में न रखें)

श्री गिरिराज ज्योति

प्राचीन भारतीय संस्कृति, ज्योतिष विज्ञान की धार्मिक, पारिवारिक, त्रैमासिक पत्रिका

15 vi|y 2021 l 14 t|ykbl 2021 rd

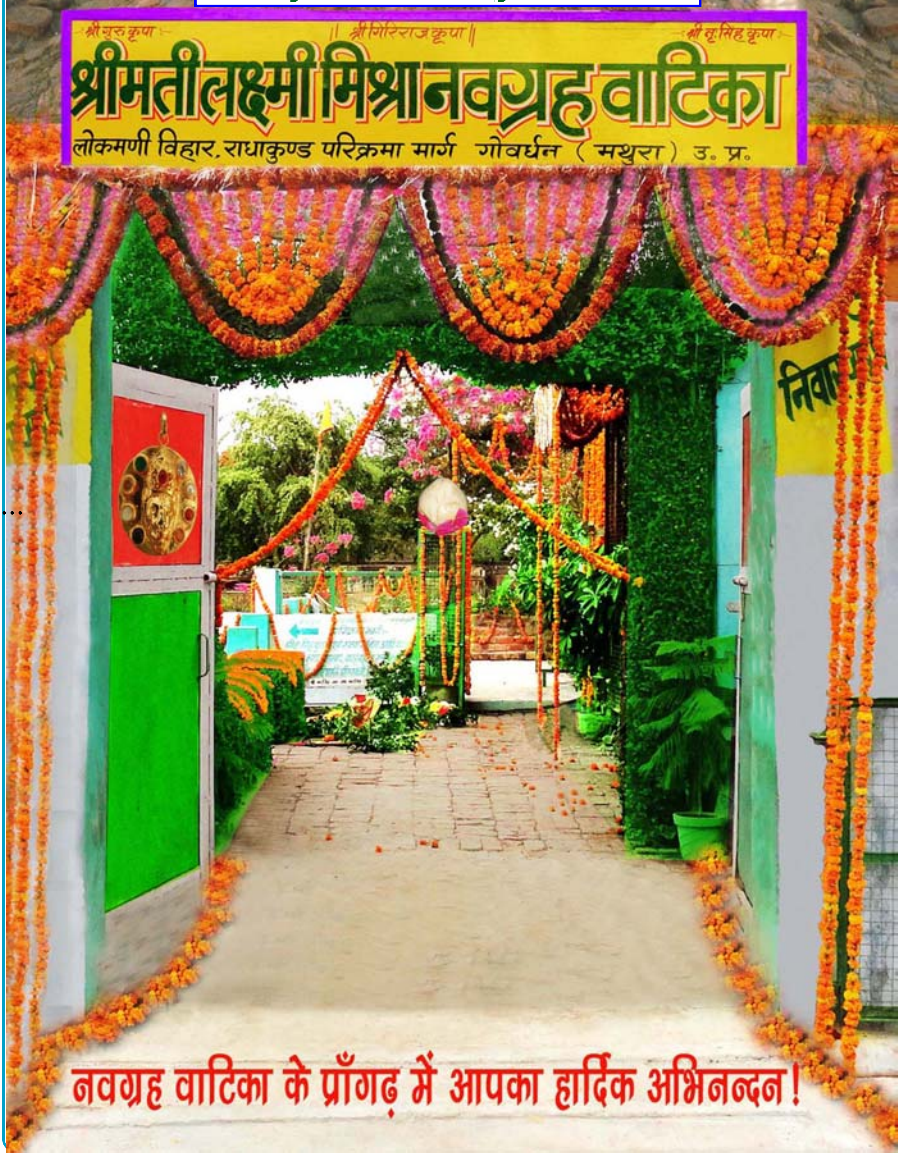

सत्यमेव जयते

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका

ब्रज गौरव, प्रतिभा सम्मान 2000 से सम्मानित

प्रातः स्मरणीय श्रीसद्गुरूदेवों का अविस्मरणीय मिलन

आर्शीवादः– श्री सद्गुरूदेव पं0 भँवर सिंह शर्मा 'जैमन'
(स्वतन्त्रता सैनानी / संरक्षक) एवं गोलोकवासी ब्रजसंत– गोवर्धन
प्रातः स्मरणीय पूज्यनीय श्री श्री 1008 श्री सद्गुरूदेव
पं0 श्री हरे राम बाबा– जतीपुरा
पं0 श्री बद्री नारायण जी, (कृष्णकुटी वाले)
पं0 श्री प्रिया शरण दास जी
पं0 श्री गया प्रसाद जी (बृजरज)

ब्रह्मा नन्द परम सुखंद केवल ज्ञान मूर्ति। द्वान्द्वातीतं गगन–सदृश तत्व मस्यादि लक्ष्यम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षीभूतम्। भावा तीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि।।

प्रधान संपादक

अभिलाषाः ।।कामये दुःख तप्तानाम् प्राणिनामार्ति नाशनम्।।
(मेरी कामना है कि दुःखों से पीड़ित प्राणियों के कष्ट दूर कर सकूं।)
प्रातः स्मरणीय सद्गुरूदेव, श्री गिरिराज महाराज, श्री नृःसिंह भगवान की अनुकम्पा तथा आप सभी के स्नेह से संकल्प अवश्य ही पूरा होगा।

आपका विद्वत्तकृपाकांक्षीं :

पं0 कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक / रमल विशेषज्ञ)
स्वर्ण पदक से अलंकृत / संपादक
सलाहकार ABI अमेरिका

गोलोकवासी/प्रेरणास्त्रोत

श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा (अंजू)

प्रधान कार्यालय

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका
श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड
गोवर्धन – 281502 (मथुरा)
Mob.- 09412226020 / 09760689730
Email-- ramal_jyotish@yahoo.co.in
navgrahvatika@gmail.com

मूल्यः–
स्व0 श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा की स्मृति में एक प्रति निःशुल्क, 100/ वार्षिक।

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह

जीवन के हर संकट में रमल ज्योतिष से कारण.

श्री नृःसिंह भगवान के द्वारा समाधान.

साक्षात् भक्त वत्सल श्री नृःसिंह भगवान की कृपा से स्थापित पराविज्ञान एवं रमल ज्योतिष पर हमारा शोध.

श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका

लोकमणि विहार, राधाकुण्ड परिक्रमा मार्ग, गोवर्धन (मथुरा)

के प्राँगढ़ में स्थापित

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड (सम्पूर्ण ज्योतिषीय/वेदोक्त)

हमारे अनुभव के द्वारा पूर्ण विधान सहित पूजा कर आप अपने जीवन में आये हुये संकट अथवा पूर्व जन्मकृत अपराधों से मुक्ति हेतु श्री नृःसिंह भगवान की कृपा प्राप्त कर सुख एवं शान्ति का अनुभव कर सकते हैं..... जैसे :-

१- यदि आप **देवदोष-पितृदोष**, **कालसर्प दोष** से परेशान हैं तो **श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड** पर शास्त्रों में वर्णित **दीपदान** कर अपने संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

२- यदि आप गृहदोष, परकृत बाधा, व्यापार बृद्धि, ऋण मुक्ति, नवग्रह शान्ति, शत्रु भय एवं अक्स्मात् आये संकट निवारण हेतु श्री नृःसिंह भगवान को शास्त्रोक्त सामिग्री अर्पित कर अपने संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

३- यदि आप ग्रहदोष, (मंगल, शनि, राहु-केतु की दशा, अन्तर्दशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों एवं कार्यों में आ रही बाधा, असाध्य रोगों के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री बटुक भैरवदेव की पूजा/पाठ/अनुष्ठान करके अपने जीवन में आये हुए संकट से मुक्ति प्राप्त करें।

४- आप घर बैठे नवग्रह वाटिका में (वीडियों द्वारा) पाठ कराकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

५- कृपया ध्यान दें:- **आपकी दृढ़ श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं धैर्य ही आपको फल देगा।** हम तो **निमित्त मात्र** हैं।

रमल ज्योतिष द्वारा आप जान सकते हैं ?

भाग्य, रोजगार, विवाह, संतान, परीक्षाफल, ऋणमुक्ति, नष्टवस्तु (लाभालाभ), भागे व्यक्ति, रोग (परकृत बाधा किस कारण से), हारजीत, नौकरी, वर्षफल, अन्य सभी प्रश्नों के उत्तर एवं अक्स्मात् आये संकट का कारण और उसका सही समाधान आप रमल ज्योतिष के द्वारा प्राप्त कर लाभान्वित हो सकते हैं।

o"k&22 foØeh laor 2078 'kkd 1943 vad&87

15 अप्रैल 2021 से 14 जुलाई 2021 तक

पत्रिका के अन्दर कहाँ क्या है ?

1.	आर्शीवाद, प्रार्थना, कवर सं0..	2
2.	संस्थान समाचार.......	1
3.	पत्रिका के अंदर...........	2
4.	संकट निवारणार्थ........	3
5.	श्री नृःसिंह यंत्रराज प्रयोग.....	4
6.	श्री नृःसिंहजयन्ती 2021....	5–6
7.	सर्व कामनासिद्धि हेतु जपै ...	6
8.	मनुष्य अपने ही कर्मों के.....	7–9
9.	मनुष्य को फल की इच्छा......	10
10.	जब मिलने लगे ऐसे संकेत.....	11–12
11.	विजया......	12–13
12.	वैवाहिक जीवन के अशुभ....	14
13.	जब शुरू होते हैं अच्छे यो....	15
14.	स्तुति, नियम, कवर सं0.......	3

laLFkku fu;e%& Jh fxfjjkt T;ksfr esa Nih jpukvksa esa çdV fd;s x;s fopkjksa ls lEiknd ,oa lEiknd eMy dk lger gksuk vko';d ugha gS D;ksafd os ys[kd ds viu Hkko gSA fo"k; lkfexzh tufgr esa ladfyr dh tkrh gS] ftlds Hkh dN gS] ge mlds lno vkHkkjh gSA ge fdlh ls dksbZ fookn ugha pkgrs fQj Hkh dksbZ okn&fookn gksrk gS rks mlds fy;s U;k; {ks= doy eFkqjk gh gksxkA fdlh Hkh çdkj dh dk;Zokgh çdk'ku frfFk ls 3 ekg ds vUnj dh tk ldrh gS] ckn esa fdlh Hkh iNrkoN ij tckc gsrq ck/; ugha gSA

çdk'ku%&

if=dk dk çdk'ku o"kZ esa 4 ckj gksxkA

1& 15 tuojh 3& 15 tqykbZ
2& 15 vçSy 4& 15 vDVwcj

lEiknd eMy

पं0 कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
^ç/kku lEiknd*
09760689730

अशोक कुमार गुप्ता ^lglEiknd*,
मथुरा– 09412281034

आकाश मिश्रा ^lglEiknd*½0;oLFkkid½,
गोवर्धन – 08445289000

राज कुमार शर्मा, देहली – 09810290567

डा0 नागेन्द्र झा, देहली – 09312043072

सुभाष अग्रवाल, गुड़गांव – 09868827820

संजीव अग्रवाल, गुड़गांव – 09818367505

चैतन्य कृष्ण शर्मा, गोवर्धन–09456897876

डा0 अशोक विश्वामित्र, गोवर्धन

कन्हैया लाल गोस्वामी, गोवर्धन

हरीओम शर्मा (एड.), गोवर्धन

डा0 विनोद दीक्षित, गोवर्धन

सूरज भान जैमन (आर.ए.एस.), कोटा

नरेन्द्र सिंह सिसोंदिया, मथुरा

राजेन्द्र कैशोरैया (एड.), मथुरा

ओमप्रकाश खण्डेलवाल (एड.), मथुरा

सी0 पी0 चतुर्वेदी (एड.), मथुरा

अजय कुमार शर्मा 'संतोष', मथुरा

सियाराम शर्मा, गोवर्धन

दीपक शर्मा, गोवर्धन

योगेश शर्मा, गोवर्धन

मोहित मिश्रा, गोवर्धन – 07417071048

धर्मेन्द्र कौशिक, मथुरा–
(मीडिया प्रभारी) 09997983147

एवं श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका परिवार....

Jh ujflg t; t; ujflg !

lo l dV fuokj.kkFk Jh ujflg e=&r= ç;kx

भगवान श्री नृःसिंह देव का प्रादुर्भाव सतयुग में अपने भक्त प्रहलाद की भक्ति और शरणागति को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए बड़े ही आश्चर्यजनक रूप में खम्ब फाड़कर प्रगट हुए थे। उनके उस रौद्र रूप को देख जगजननी माँ लक्ष्मी भी डर गयीं। भगवान नरसिंह अपने भक्त की प्रार्थना पर ही शांत हुए। श्री नरहरि ने सभी भक्तों को आनन्द प्रदान किया। उन्हीं भगवान श्री नरसिंह देव के यह बीज मंत्र-तंत्र-यंत्र भक्तों के अभीष्ट की पूर्ति एवं घोर संकट में लाभ के लिए ही प्रकाशित किये जा रहे हैं। आशा है भक्तजन इनको नियम-पूर्वक करने से भगवान श्री नरसिंह देव की कृपा अवश्य ही प्राप्त होगी। जिससे आपके संकटों का निवारण हो जायेगा। भक्तजनों से विनम्र प्रार्थना है कि इस मंत्र-तंत्र का प्रयोग अपने, अपने परिवार अथवा स्वजन के कष्ट निवारण के लिए ही करें उन्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। यदि किसी का अहित सोचकर कर्म किया गया तो उन्हें सफलता नहीं मिलेगी बल्कि स्वयं उन्हें ही कष्ट प्राप्त होगा क्योंकि सत्य की हमेशा जीत होती है।

यदि आप पूरे विधि विधान से भगवान नरसिंह जी का पूजन नहीं कर सकते तो आपको चलते फिरते मानसिक रूप से जयप्रद मंत्र का जाप करना चाहिए।

श्री नरसिंह बीज मंत्र प्रयोगः-

जयप्रद मंत्र- श्री नरसिंह जय जय नरसिंह! के जाप से भी मनोरथ पूरण होते हैं।

रोग मुक्ति के लिये मंत्रः-

ऊँ नृं नरसिंहाय नमः। प्रातःकाल सर्व प्रथम २५ बार उक्त मंत्र का जप करके स्वयं जल को पीता है तथा भगवान श्री नृःसिंह जी को चन्दन का लेप देने से रोग मुक्ति होती है।

संतान प्राप्ति के लिये मंत्रः-

ऊँ नृं नृं नरसिंहाय नमः। शायंकाल १०८ बार उक्त मंत्र का जप करके विधान सहित भगवान श्री नृःसिंह जी को लाल गुलाब का पुष्प अर्पित किया जाये तो कृपा प्राप्त होती है।

धन लाभ एवं अन्य संकट निवारण के लिये मंत्रः- ऊँ नृं नृं नृं नरसिंहाय नमः।

१. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित नागकेशर अर्पित करने से धन लाभ मिलता है।

२. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित मोर पंख चढ़ाने से कालसर्प दोष दूर होता है।

३. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित दही अर्पित करने से मुकदमों में विजय मिलती है।

४. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित बर्फीला पानी अर्पित करने से शत्रु पस्त होते हैं।

५. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित मक्की का आटा चढ़ाने से रूठा व्यक्ति मान जाता है।

६. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित लोहे की कील चढ़ाने से बुरे ग्रह टलते हैं।

७. भगवान नरसिंह को रात्रि में विधान सहित चाँदी और मोती चढ़ाने से रूका धन मिलता है।

८. भगवान नरसिंह को शायंकाल में विधान सहित भगवा ध्वज चढ़ाने से रूके कार्य में प्रगति होती है।

यह सभी प्रयोग श्री नृःसिंह भगवान के मंदिर में ही करें। विशेष विधान वहाँ के सेवाधिकारी से पूछ लें अथवा हमसे सम्पर्क करें।

पं० कैलाश चन्द्र मिश्रा 'आचार्य'
(श्री नृःसिंह उपासक/रमल विशेषज्ञ)
संस्थापक श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड
मंदिर श्री नृःसिंह भगवान,
संस्थापक
श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका

श्री नरसिंह यंत्रराज प्रयोग

हमारा पराविज्ञान की सहायता से रमल ज्योतिष पर जनकल्याणार्थ शोध पर.....विश्व में प्रथमवार स्थाापित **श्री नरसिंह यंत्रराज** पर सर्व कार्य सिद्दि एवं सर्व संकट निवारणार्थ किये जाने वाले प्रयोग :- यदि आप पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, भक्ति एवं धैर्य के साथ इस यंत्र की पूजा करते हैं तो निश्चित ही श्री नृःसिंह भगवान की कृपा प्राप्त कर अपने संकट से मुक्त हो सकते हैं। श्री नृसिंह ऋणमुक्ति यंत्र पर अलग-अलग चीजें चढ़ाने से भक्तों को अलग-अलग फल मिलता है। श्री नृसिंह ऋणमुक्ति यंत्र के उपायों से हर तरह की समस्या दूर होगी ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास हैं। श्री नृःसिंह भगवान के मंदिर में जाकर उनकी फूल और चंदन से यंत्र की पूजा करें। इसके बाद जो भी आपकी मनोकामना हो उसके अनुसार भगवान को वैसी वस्तु अर्पित करें। जैसे.....

१. धन प्राप्ति के लिये इस यंत्र पर भंगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित नागकेशर अर्पित करें।

२. यदि आपकी कुंडली में कालसर्प दोष है तो इस यंत्र पर भंगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित मोरपंख अर्पित करें।

३. किसी कानूनी उलझन में फंसे है और कोर्ट-कचहरी में चक्कर लगाते हुए थक गए हैं तो इस यंत्र पर भगवान को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित दही अर्पित करने से मुकदमों विजय मिलती है।

४. प्रतिस्पर्धा से परेशान हैं या अन्जान शत्रुओं का डर हमेशा बना रहता है तो भगवान नृःसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित बर्फ मिला श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड का जल मिट्टी के पात्र में अर्पित करें। शत्रु परास्त होगें।

५. अगर कोई आपसे नाराज है या दूर हो गया है तो उससे रिश्ते को फिर वैसे ही बनाने के लिए इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित मक्की का आटा चढ़ाने से रूठा व्यक्ति मान जाता है।

६. अगर आप कर्ज में डूब रहे हों या आपका पैसा मार्केट में फंस गया है, उधारी वसूल नहीं हो रही है तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित चांदी या मोती अर्पित करने से रूका धन मिलता होता है।

७. अगर शरीर में लंबे समय से कोई बीमारी है, राहत नहीं मिल पा रही है, तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित चंदन का लेप अर्पित करें।

८. यदि आप क्रूर ग्रहों से पीड़ित है तो इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित लोहे की कील चढ़ाने से क्रूर ग्रहों के कोप से रक्षा होती है।

९. यदि आपका कोई कार्य रूका हुआ है तो भगवान नरसिंह को शायंकाल में विधान सहित भगवा ध्वज चढ़ाने से रुके कार्य में प्रगति होती है।

१०. यदि क्रूर ग्रहों अथवा अन्य कारणों से किसी लड़के की शादी में बाधा आ रही है तो प्रत्येक शुक्रवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित सफेद वस्तु अर्पण करने से शीघ्र ही विवाह का योग वनेगा।

११. यदि क्रूर ग्रहों अथवा अन्य कारणों से किसी लड़की की शादी में बाधा आ रही है तो प्रत्येक गुरूवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह को शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पीली वस्तु अर्पण करने से शीघ्र ही विवाह का योग वनेगा।

विशेष पूजाः- १. मुकदमे में विजय और विरोधियों को शान्त करने के लिएः- प्रतिदिन इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, पूजा में लाल पुष्प, एक लाल रेशमी धागा अर्पित करें, उनके सामने घी का चौमुखी दीपक जलाएं। इसके बाद विशेष मंत्र की ५ माला जप करें। शत्रु और विरोधियों के शांत होने की प्रार्थना करें तदुपरांत सेवाधिकारी से अर्पित किए हुए धागे को दाहिने हाथ की कलाई में धारण करें।

२. कर्ज मुक्ति और धन प्राप्ति के लिये:- मंगलवार को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, तत्पश्चात श्री यंत्रराज के समक्ष तीन दीपक जलाएं, साथ ही जितनी आपकी उम्र है उतने ही लाल फूल अर्पित करें तदुपरांत विशेष मन्त्र **"ऊँ ऋणमुक्तेश्वर नरसिंहाय मम् ऋण मुक्तिं शीघ्रं कुरू कुरू श्री नरसिंहाय नमः"** का जप करते हुए मसूर की दाल (साबुत) अर्पित करें।

३. आयु रक्षा और सर्वकल्याण के लिएः- गुरूवार अथवा चतुर्दशी को इस यंत्र पर भगवान नरसिंह की शायंकाल/रात्रि में विधान सहित पंचोपचार अथवा षोड़शोपचार पूजा करें, उन्हें पीली वस्तुओं का भोग लगाएं.- इसके बाद विशेष मन्त्र का कम से कम १०८ बार जाप करें। **"उग्रं वीरं महाविष्णुं, ज्वलन्तं सर्वतोमुखं। नृःसिंहं भीषणं भद्रं, मृत्युं मृत्युं नमाम्यहं।।"** ।। श्री नरसिंह जय जय नरसिंह।।

श्री नृःसिंह जयंती २०२१

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को नृसिंह जयंती के रूप में मनाया जाता है। भगवान श्री नृःसिंह शक्ति तथा पराक्रम के प्रमुख देवता हैं, पौराणिक मान्यता एवं धार्मिक ग्रंथों के अनुसार इसी तिथि को भगवान विष्णु ने नृःसिंह अवतार लेकर दैत्यों के राजा हिरण्यकशिपु का वध किया था। इस वर्ष यह श्री नृःसिंह जयन्ती २५ मई २०२१ मंगलवार को मनाई जाएगी।

पंचांग के अनुसार श्री नरसिंह भगवान जयंती का व्रत वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को किया जाता है। पुराणों में वर्णित कथाओं के अनुसार इसी पावन दिवस को भक्त प्रहलाद की रक्षा करने के लिए भगवान विष्णु ने नृसिंह रूप में अवतार लिया तथा दैत्यों का अंत कर धर्म कि रक्षा की। अतः इस कारणवश यह दिन भगवान नृःसिंह के जयंती रूप में बड़े ही धूमधाम और हर्सोल्लास के साथ संपूर्ण भारत वर्ष में मनाया जाता है।

श्री नरसिंह जयंती कथा :- श्री नृःसिंह अवतार भगवान विष्णु के प्रमुख अवतारों में से एक है। नरसिंह अवतार में भगवान विष्णु ने आधा मनुष्य व आधा शेर का शरीर धारण करके दैत्यों के राजा हिरण्यकशिपु का वध किया था। धर्म ग्रंथों में भगवान के इस अवतरण के बारे विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है जो इस प्रकार है- प्राचीन काल में कश्यप नामक ऋषि हुए थे उनकी पत्नी का नाम दिति था। उनके दो पुत्र हुए, जिनमें से एक का नाम हरिण्याक्ष तथा दूसरे का हिरण्यकशिपु था।

हिरण्याक्ष को भगवान श्री विष्णु ने पृथ्वी की रक्षा हेतु वांराह रूप धरकर मार दिया था। अपने भाई कि मृत्यु से दुःखी और क्रोधित हिरण्यंकशिपु ने भाई की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए अजेय होने का संकल्प कियां सहस्त्रों वर्षों तक उसने कठोर तप किया, उसकी तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्माजी ने उसे **'अजेय'** होने का वरदान दिया।वरदान प्राप्त करके उसने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया, लोकपालों को मार कर भगा दिया और स्वतः सम्पूर्ण लोकों का अधिपति हो गया।

देवता निस्हाय हो गए थे वह असुर को किसी प्रकार वे पराजित नहीं कर सकते थे अहंकार से युक्त वह प्रजा पर अत्याचार करने लगा। इसी दौरान हिरण्यकशिपु कि पत्नी कयाधु ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम प्रह्लाद रखा गया एक राक्षस कुल में जन्म लेने पर भी प्रह्लाद में राक्षसों जैसे कोई भी दुर्गुण मौजूद नहीं थे तथा वह भगवान नारायण का भक्त था तथा अपने पिता के अत्याचारों का विरोध करता था।

भगवान-भक्ति से प्रह्लाद का मन हटाने और उसमें अपने जैसे दुर्गुण भरने के लिए हिरण्यकशिपु ने बहुत प्रयास किए, नीति-अनीति सभी का प्रयोग किया किंतु प्रह्लाद अपने मार्ग से विचलित न हुआ तब उसने प्रह्लाद को मारने के षड्यंत्र रचे मगर वह सभी में असफल रहा। भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद हर संकट से उबर आता और बच जाता था।

इन बातों से क्षुब्ध हिरण्यकशिपु ने उसे अपनी बहन होलिका की गोद में बैठाकर जिन्दा ही जलाने का प्रयास किया। होलिका को वरदान था कि अग्नि उसे नहीं जला सकती परंतु जब प्रल्हाद को होलिका की गोद में बिठा कर अग्नि में डाला गया तो उसमें होलिका तो जलकर राख हो गई किंतु प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हुआ।

इस घटना को देखकर हिरण्यकशिपु क्रोध से भर गया उसकी प्रजा भी अब भगवान विष्णु को पूजने लगी, तब एक दिन हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से पूछा कि बता, तेरा भगवान कहाँ है ? इस पर प्रह्लाद ने विनम्र भाव से कहा कि प्रभु तो सर्वत्र हैं, हर जगह व्याप्त हैं। क्रोधित हिरण्यकशिपु ने कहा कि "क्या तेरा भगवान इस स्तम्भ (खंभे) में भी है ?" प्रह्लाद ने हाँ, में उत्तर दिया।

यह सुनकर क्रोधांध हिरण्यकशिपु ने खंभे पर प्रहार कर दिया तभी खंभे को चीरकर श्री नृःसिंह भगवान प्रकट हो गए और हिरण्यकशिपु को पकड़कर अपनी जाँघों पर रखकर उसकी छाती को नखों से फाड़ डाला और उसका वध कर दिया। श्री नृःसिंह भगवान प्रकट हो गए और हिरण्यकशिपु को पकड़कर अपनी जाँघों पर रखकर उसकी छाती को नखों से फाड़ डाला और उसका वध कर दिया।

श्री नृःसिंह जी ने प्रहलाद की भक्ति से प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि आज के दिन जो भी मेरा व्रत करेगा वह समस्त सुखों का भागी होगा एवं पापों से मुक्त होकर परमधाम को प्राप्त होगा अतः इस कारण से दिन को श्री नृःसिंह जयंती-उत्सव के रूप में मनाया जाता है।

भगवान श्री नृःसिंह जयंती पूजा :- श्री नृःसिंह जयंती के दिन व्रत-उपवास एवं पूजा अर्चना की जाती है इस दिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए तथा भगवान श्री नृःसिंह की विधी विधान के साथ पूजा अर्चना करें। भगवान श्री नृःसिंह तथा लक्ष्मीजी की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए तत्पश्चात वेदमंत्रों से इनकी प्राण-प्रतिष्ठा कर षोड़शोपचार से पूजन करना चाहिये। भगवान श्री नरसिंह जी की पूजा के लिए फल, पुष्प, पंचमेवा, कुमकुम, केसर, नारियल, अक्षत व पीताम्बर रखें। गंगाजल, काले तिल, पंचगव्य व हवन सामग्री का पूजन में उपयोग करें। भगवान श्री नरसिंह को प्रसन्न करने के लिए उनके नरसिंह गायत्री मंत्र अथवा अन्य मंत्रों का जाप करें। पूजा पश्चात् एकांत में कुश के आसन पर बैठकर रुद्राक्ष की माला से श्री नृःसिंह भगवान जी के मंत्र का जप करना चाहिए। इस दिन व्रती को सार्मथ्य अनुसार तिल, स्वर्ण तथा वस्त्रादि का दान देना चाहिए। इस व्रत करने वाला व्यक्ति लौकिक दुःखों से मुक्त हो जाता है भगवान श्री नृःसिंह अपने भक्त की रक्षा करते हैं व उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

नरसिंह मंत्र :-

१. ऊँ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृःसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युं नमाम्यहम्।।

२. ऊँ नृं नृं नृं नरसिंहाय नमः ।

३. ऊँ नरसिंहाय विद्यमहे वज्रनखाय धीमहि तन्नौ नरसिंह प्रचोद्यात्।

४. ऊँ ह्रीं क्ष्रौं श्रीं श्री लक्ष्मी नरसिंहाय नमः।

इन मंत्रों का जाप करने से समस्त दुखों का निवारण होता है तथा भगवान श्री नृःसिंह की कृपा प्राप्त होती है।

सर्वकामना सिद्धि हेतु जपें भगवान परशुराम के विशेष मंत्र

भगवान विष्णु के दशावतार में छठे अवतार भगवान परशुराम माने जाते हैं। क्रोध और दानशीलता में उनका कोई सानी नहीं है। शस्त्र और शास्त्र के ज्ञाता सिर्फ और सिर्फ भगवान परशुराम ही माने जाते हैं। भगवान शिव ने उन्हें मृत्युलोक के कल्याणार्थ परशु अस्त्र प्रदान किया जिससे वे परशुराम कहलाए। वे परम शिवभक्त थे।

उन्होंने सहस्रार्जुन की इहलीला समाप्त कर दी। प्रायश्चित के लिए सभी तीर्थों में तपस्या की। गणेशजी को एकदंत करने वाले भी परशुराम थे। पृथ्वी को २१ बार क्षत्रियों से विहीन करने वाले भगवान परशुराम ही थे। उनकी दानशीलता ऐसी थी कि समस्त पृथ्वी ही ऋषि कश्यप को दान कर दी। उनके शिष्यत्व का लाभ भीष्म, द्रौण और दानवीर कर्ण ही ले पाए जिसे उन्होंने ब्रह्मास्त्र की दीक्षा दी।

भगवान परशुराम की सेवा-साधना करने वाले भक्त भूमि, धन, ज्ञान, अभीष्ट सिद्धि, दारिद्रय से मुक्ति, शत्रु नाश, संतान प्राप्ति, विवाह, वर्षा, वाक्य सिद्धि इत्यादि पाते हैं। महामारी से रक्षा कर सकते हैं।

अक्षय तृतीया के दिन सर्वकामना की सिद्धि हेतु भगवान परशुराम के गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए।

मंत्र इस प्रकार हैं :-

१. ऊँ ब्रह्मक्षत्राय विद्महे क्षत्रियान्ताय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

२. ऊँ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि तन्नो परशुरामरू प्रचोदयात्।

३. ऊँ रां रां ऊँ रां रां परशुहस्ताय नमः।।

जप-ध्यान कर दशांस हवन करें तथा हर प्रकार की समस्याएं दूर करें।

मनुष्य अपने ही कर्मों के फल को भोगता है, ईश्वर उसे सुख-दुःख नहीं देते

क्या आपने कभी सोचा है कि कभी-कभी जब आप कोई कार्य करना नहीं चाहते तो भी आपको कौन सी शक्ति ऐसा करने हेतु बाध्य करती है ? मेरे विचारानुसार, यह कर्म का नियम है जो हमें समस्त कार्य स्वेच्छा से या कभी-कभी अनिच्छा से करने हेतु बाध्य करता है। कर्म के नियम से कोई मुक्त नहीं रह सकता। दुर्योधन ने भी कहा था "मैं कर्म के सिद्धान्त का सार जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि क्या सही है और क्या गलत, किन्तु फिर भी मैं अज्ञात शक्तियों द्वारा कर्म करने हेतु बाध्य किया जाता हूँ ? कर्मयोग से बचने के लिए यहाँ संसार में कोई साधन नहीं है साथ ही हम अपने किए हुए कर्म को कहीं नहीं छिपा सकते है। आनंद से भी प्राणी उत्पन्न होते हैं, आनंद में ही जीते हैं तथा अंत में आनंद में ही प्रविष्ट हो जाते हैं। मनुष्य अपने ही कर्मों का शुभ एवं अशुभ फल भोगता है, ईश्वर उसे सुख-दुःख नहीं देते। आराध्य का स्मरण ही सुमिरन है और सुमिरन आराध्य के प्रति श्रद्धानिष्ठ बनने की सतत प्रक्रिया है।

मन, प्राण, बुद्धि और इंद्रियों का एकाकार ही मानव शरीर की भौतिकवादी सरंचना है। इसमें दुःख और सुख समाहित है। प्रतिकूल परिस्थितियां दुःख का आभास देती हैं और अनुकूल परिस्थितियां सुख का बोध कराती हैं। ये दोनों हमें प्रभु की कृपा से ही प्राप्त होते हैं जो प्रत्येक मनुष्य के अपने-अपने कर्मों, अकर्मों, विकर्मों और सकर्मों का प्रतिफल है। यह परिवर्तनशील है और प्रारब्ध के ही अंश हैं। न चाहते हुए भी मनुष्य दुःख और सुख भोगकर मिटा देता है। चाहकर भी उसमें परिवर्तन नहीं कर सकता। जब हम दूसरों की खुशहाली देखें तो, यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वे सुख भोग रहे हैं। यदि हम उनसे पूछें तो सुख में भी दुःख के कई कारण निकलेंगे। यदि उनके पास धन अधिक है तो भय और मोह रहेगा। ये राग, द्वेष आदि गुणों और अवगुणों से उत्पन्न होते हैं। जब गुणों से राग उत्पन्न होता है तो मनुष्य शांत और अंतर्मुखी हो जाता है। यदि अवगुणों के प्रभाव से द्वेष होता है तो मनुष्य क्रोधी और ईर्ष्यालु हो जाता है। पूर्व प्रारब्ध को सुख और दुःख मानने वाले मनुष्य संघर्ष करके इसे सरलता पूर्वक मिटा देते हैं। जो लोग प्रारब्ध को नहीं मानते, वे रो-रोकर समय काटते हैं। यहां यह समझना श्रेयस्कर होगा कि मनुष्य की इच्छा से कुछ नहीं होता, समय से ही वह सब कुछ होता है।

आध्यात्मिक जागृति से ही विसंगतियां दूर होती हैं। इस भौतिकता को सर्वस्व समझ लेना भारी भूल है। इस अथाह ब्रह्मांड में हम पृथ्वी के जीव तो अंशमात्र ही अपनी-अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। हमें उत्पन्न और नाश करने वाले तथा दृश्य एवं अदृश्य अवस्थाओं में जीवों के संचालन का बृहद कार्यक्रम निर्धारित करने वाले कुछ अन्य तत्व भी है। कहने का तात्पर्य यह है कि सारी परिस्थितियों के कार्यकलाप का लेखा-जोखा जरूर होगा, जिससे दुःख और सुख समाहित होगा। इसकी गणना जीवों को नहीं मालूम होती। इस जीवन चक्र में परम कारण का रहस्य आध्यात्मिक चिंतन के ज्ञान से ही संभव है। पृथ्वी के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर भी हम प्रभु के इस परम कारण को नहीं समझ सकते। श्रुतियों और शास्त्रों में जगह-जगह कहा गया है कि परमब्रह्म ही जगत का कारण है जो आनंदमय है। आनंद से भी प्राणी उत्पन्न होते हैं, आनंद में ही जीते हैं तथा अंत में आनंद में ही प्रविष्ट हो जाते हैं। मनुष्य अपने ही कर्मों का शुभ एवं अशुभ फल भोगता है, ईश्वर उसे सुख-दुःख नहीं देते। आराध्य का स्मरण ही से

सुमिरन है और सुमिरन आराध्य के प्रति श्रद्धानिष्ठ बनने की सतत प्रक्रिया है। इस आराधन प्रक्रिया को जो जितने मनोयोग निष्पादित करता है, वह उतना ही आत्मतोष की अनुभूति करता है। आत्मतोष की यह संजीवनी उसे तनावमुक्त रखने के साथ ही शांत-सुखद जीवन जीने एवं कार्यक्षेत्र में सफल होने की अक्षय ऊर्जा प्रदान करती है। सुमिरन का सुख लाभ अप्रत्यक्ष एवं अनिर्वचनीय है। नित्य नियमपूर्वक किया जाने वाला सुमिरन नैतिक, अनुष्ठानिक श्रेणी में आता है। आपको एक कहानी के माध्यम से मैं आपकी आंखे खोलने का प्रयास करता हूँ।

एक गांव में जमींदार और उसके एक मजदूर की साथ ही मौत हुई। दोनों यमलोक पहुंचे।

धर्मराज ने जमींदार से कहा- आज से तुम मजदूर की सेवा करोगे।

मजदूर से कहा- अब तुम कोई काम नहीं करोगे, आराम से यहां रहोगे।

जमींदार परेशान हो गया। पृथ्वी पर तो मजदूर जमींदार की सेवा करता था, पर अब उल्टा होने वाला था।

जमींदार ने कहाः- भगवन, आप ने मुझे यह सजा क्यों दी ? मैं तो भगवान का परम भक्त हूं। प्रतिदिन मंदिर जाता था। देसी घी से भगवान की आरती करता था और बहुमूल्य चीजें दान करता था। धर्म के अन्य आयोजन भी मैं करता ही रहता था।

धर्मराज ने मजदूर से पूछा- तुम क्या करते थे पृथ्वी पर ?

मजदूर ने कहा- भगवन, मैं गरीब मजदूर था। दिन भर जमींदार के खेत में मेहनत मजदूरी करता था। मजदूरी में उनके यहां से जितना मिलता था, उसी में परिवार के साथ गुजारा करता था। मोह माया से दूर जब समय मिलता था तब भगवान को याद कर लेता था। भगवान से कभी कुछ मांगा नहीं।

गरीबी के कारण प्रतिदिन मंदिर में आरती तो नहीं कर पाता था, लेकिन जब घर में तेल होता तब मंदिर में आरती करता था और आरती के बाद दीपक को अंधेरी गली में रख देता था ताकि अंधेरे में आने-जाने वाले लोगों को प्रकाश मिले।

धर्मराज ने जमींदार से कहाः- आपने सुन ली न मजदूर की बात?

भगवान धन-दौलत और अहंकार से खुश नहीं होते। भगवान मेहनत और ईमानदारी से कमाने वाले व्यक्ति से प्रसन्न रहते हैं। यह मजदूर तुम्हारे खेतों में काम करके खुश रहता था और सच्चे मन से भगवान की आराधना करता था। जबकि तुम आराधना ज्यादा धन पाने के लिए करते थे। तुम मजदूरों से ज्यादा काम लेकर कम मजदूरी देते थे। तुम्हारे इन्हीं कामों के कारण तुम्हें मजदूर का नौकर बनाया गया है ताकि तुम भी एक नौकर के दुख-दर्द को समझ सको।

आप अपने कर्मफल से नहीं बच सकते। आप जहाँ भी जाते हैं, जो कुछ भी करते हैं, आपके कर्म ही आपको शांतिपूर्वक देख रहे होते हैं। किसी भी दिन आपको आपके कर्म का फल पृथ्वी पर वहन करना ही होता है।

आइए! अपने कर्मफल का आनन्द लें। अच्छे कर्म करें। समस्याओं एवं दुःख की परिस्थिति में अन्य को दोष न देकर अपने कर्म फल को स्वीकार करें।

कुछ लोगों का कहना है कि आज की दुनिया में जो मनुष्य अत्याचार करता है, कालाबाजार करता है, घूस खा रहा है, मायाचार करता है, व्यसनी है, पानी है, वही सुखी देखा जाता है। उसी के बड़े-बड़े बंगले बने हुए हैं, वही आज की दुनिया में सम्मान पाता है और जो ईमानदारी से न्यायपूर्वक धन कमाकर अपना

किसी तरह गुजारा करता है, उसकी न तो कोई भाई-बन्धुओं में गिनती है, न समाज में, न उसे कोई स्थान प्राप्त है, न उसके पास बड़ी बिल्डिंग ही है, न कुछ सम्पत्ति ही है। इसलिए लोग कहते हैं कर्म कोई फल नहीं देते, अगर फल देते होते तो जो व्यक्ति भगवान की भक्ति करता है, पाप नही करता, दान आदि देता है, उसे सुखी रहना चाहिए और जो व्यसनी है, पानी है, अत्याचारी है, उसे दुखी रहना चाहिए। पर ऐसा मानना ठीक नहीं है क्योंकि वह कोई जरूरी नहीं कि आज के किये हुए शुभाशुभ कर्म आज ही फल दें। आज भी दे सकते हैं, कुछ समय पश्चात् भी और दूसरे जन्मों में भी उदय आ सकते हैं तथा कई जन्मों के बाद भी कर्म अपना फल दे सकते हैं, क्योंकि जब जिस कर्म का उदय होगा तभी उसका फल मिलेगा। जो लोग आज पाप करते हुए भी सुखी देखे जाते हैं तो कहना होगा कि अभी उनके पूर्व में किये हुए पुण्य कर्मों का फल प्राप्त हो रहा है। अभी जो कुछ कर रहा हैं उसका फल भी भविष्य में प्राप्त होगा। पापी के लिए किसी ने कहा है -

जब तक तेरे पुण्य का, बीता नहीं करार।
तब तक तेरे माफ हैं, औगुण करो हजार।।

श्रीमद्भागवत गीता में मनुष्य के पाप कर्मों का विश्लेषण किया गया है। बताया गया है कि जो व्यक्ति समस्त पाप कर्मों के फलों (बन्धनों) का अन्त करके भौतिक जगत् के द्वन्द्वों से मुक्त हो जाता है और भगवान की भक्ति में लग जाता है उनके सारे पाप कर्म चाहे वे फलीभूत हो चुके हों, सामान्य हों या बीज रूप में हों, क्रमशः नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार जब बीज बोया जाता है तो वह तुरन्त वृक्ष नहीं बन जाता, इसमें कुछ समय लगता है। पहले एक छोटा सा अंकुर रहता है, फिर यह पौधे का रूप धारण करता है और उसके बाद वह वृक्ष बनता है। वृक्ष बनने के बाद ही इसमें फूल आते हैं, फल लगते हैं और तब बीज बोने वाले व्यक्ति फूल तथा फल का उपभोग कर सकते हैं। इसी प्रकार जब कोई मनुष्य पाप कर्म करता है, तो बीज की ही भांति इसके भी फल मिलने में समय लगता है। इसमें भी कई अवस्थाएं होती हैं। भले ही व्यक्ति में पाप कर्मों का उदय होना बन्द हो चुका हो, भले ही उसने पाप कर्म करना बंद कर दिया हो किन्तु पूर्व में किए गये पाप कर्म का फल तब भी मिलता रहता है। कुछ पाप तब भी बीज रूप में बचे रहते हैं, कुछ फलीभूत हो चुके होते हैं, जिन्हें हम दुख तथा वेदना के रूप में अनुभव करते हैं।

कहा जाता है कि संगति गुण अनेक फल। घुन गेहूं की संगति करता है। गेहूं की नियति चक्की में पिसना है। गेहूं से संगति करने के कारण ही घुन को भी चक्की में पिसना पड़ता है। देखा जाता है कि किसी जातक के पीड़ित होने पर उसके संबंधी तथा मित्र भी पीड़ित होते है। इस दृष्टि से सज्जनों का संग साथ शुभ फल और अपराधियों दुष्टों का संग साथ अशुभ फल की पूर्व सूचना मिल जाती है। किसी भी अपराधी से संपर्क उसका आतिथ्य या उपहार स्वीकार करना भयंकर दुर्भाग्य विपत्ति को आमंत्रण देना है।

अतः यश-अपयश, उचित-अनुचित का हर समय विचार करके ही कोई काम करना चाहिए, क्योंकि इन्हीं से सुखद-दुखद परिस्थितियां बनती हैं। इन्हीं के अनुसार भविष्य का निर्धारण होता है।अगर हमें बेवजह प्रशंसा मिले तो उसपर बहुत अधिक उत्साहित और खुश होने की बजाय अपनी वास्तविकता को याद रखना चाहिए। इसी प्रकार अगर अकारण कुछ बुरा होता है तो दुखी होने की बजाय सत्य को स्वीकर करना चाहिए। जो हो रहा है उसका आंकलन करना चाहिए और अपने दिल की पुकार को ही सुनना

शेष पृष्ठ..१५.. पर......

मनुष्य को फल की इच्छा किए बगैर कर्म करने चाहिए!

इंसान की सफलता में भाग्य उसका साथी है, लेकिन भाग्य ही सब कुछ नहीं होता, बल्कि इंसान के कर्म ही भाग्य की रचना करते हैं, इसलिए हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए, तभी भाग्य का साथ मिलता है। कर्म और भाग्य दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं। कर्म किए बगैर भाग्य नहीं फलता और भाग्य के बगैर कर्म की कोई गति नहीं है। यदि मनुष्य के कर्म अच्छे हैं, तो भाग्य उससे विमुख नहीं हो सकता।

इसके विपरीत भाग्य बलवान है और कर्म अनुकूल नहीं है, तो भाग्य भी उसका अधिक साथ नहीं देता। चाणक्य के अनुसार कुछ लोग कहते हैं कि जब भाग्य ही सब कुछ है, तो मेहनत करना बेकार है। वहीं अगर भाग्य में ये लिखा हो कि कोशिश करने पर ही मिलेगा, तब क्या करोगे ? सिर्फ भाग्य के भरोसे बैठे रहने वालों को कुछ नहीं मिलता, बल्कि जो कर्म करते हैं, भाग्य उनका साथ देता ही है, साथ ही वे अपने पुरुषार्थ की वजह से कई गुना लाभ प्राप्त करते हैं। किसी का भाग्य कमजोर भी हो, तो व्यक्ति उसे अपने पुरुषार्थ से पूरी तरह बदल सकता है। महाभारत में श्रीकृष्ण ने भी सिर्फ कर्म करने को प्रधानता दी। वे कहते हैं कि मनुष्य को फल की इच्छा किए बगैर कर्म करने चाहिए। कर्मवीर ही हर जगह और हर काल में फूलते-फलते हैं। उनमें ऐसे गुण होते हैं कि एक ही क्षण में उनका बुरा समय भी अच्छा बन जाता है। उनके सामने कैसा भी संकट आ जाए, वे बिल्कुल नहीं घबराते हैं। वे परेशान होकर किसी काम को छोड़ते नहीं, बल्कि अपनी असफलताओं का आकलन करके वे पुनः प्रयास शुरू कर देते हैं, जिसकी वजह से उन्हें सफलता मिलती है। संत तुलसीदास का कहना था कि इस संसार में सभी कुछ है जिसे हम पाना चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन कर्महीन व्यक्ति इच्छित चीजों को पाने से वंचित रह जाते हैं। कर्म का परिवार और गोत्र इत्यादि से भी कुछ लेना-देना नहीं है। महाभारत में कर्ण ने कहा कि कौन से कुल में जन्म लेना यह भाग्य के हाथ में है, लेकिन पराक्रम करना मेरे हाथ में है। सच्चाई ये ही है कि ईश्वर भी उन्हीं की मदद करता है, जो स्वयं की मदद करते हैं। अथर्ववेद में कहा गया है कि मेरे दाएं हाथ में कर्म है और बाएं हाथ में जय। इसलिए जब किसी मनुष्य को ये लगे कि उसका भाग्य उसका साथ नहीं दे रहा है, तो उसे ये सवाल अपने आपसे पूछना चाहिए कि क्या ये दुर्लभ मनुष्य योनि उसे उसी भाग्य की बदौलत नहीं मिली है ?

संस्थान की ओर से विशेष सुविधा

१- आज के भौतिकवादी युग में सर्व संकट निवारण हेतु श्री नृःसिंह जी के अनुष्ठान की विशेष व्यवस्था।

२- आज के भौतिकवादी युग में (मंगल, शनि, राहु-केतु की दशा, अर्न्तदशा, अनेक आपत्तियों, कष्टों एवं कार्यों में आ रही बाधा, असाध्य रोगों के अवसर पर अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये अचूक अनुभव सिद्ध श्री बटुक भैरव शतमष्टोत्तर पूजा/ पाठ/अनुष्ठानों की विशेष व्यवस्था।

३- यदि आप अपने दैनिक जीवन में परेशान हैं तो हमारे अनुभवों का लाभ लेकर लाभान्वित हो सकते हैं.

जैसेः- ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, परकृत बाधा, व्यापार बृद्धि, ऋण मुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि-आदि लौकिक समस्याओं के लिए ! www.navgrahvatika.com

जीवन के हर संकट में रमल ज्योतिष से कारण जानें.

जब मिलने लगें ये संकेत तो समझिए ईश्वर के बहुत करीब हैं आप

क्या आपको भी ऐसा लगता है ?

वो शाम बहुत उदासी भरी हुआ करती थी जब मुझे अक्सर ऐसा महसूस होता था कि हर अगला दिन एक नई मुश्किल से भरा होगा या फिर उस दिन भी मेरे जीवन में अंधेरा होगा। मैं अपने जीवन को उस तरह नियंत्रित नहीं कर पा रहा था जैसा मैं चाहता था। लगता था कि कुछ तो है जिसे बदलना चाहिए। चारों तरफ से लोगों से घिरे होने के बाद भी एक अजीब सा अकेलापन था। मुझे अभी भी याद है एक दिन मैं इन सबसे थक गया और मैंने ठान लिया कि यह बदलना चाहिए और सचमुच यह सब बदल गया है। आप जानते हैं ऐसा कैसे हुआ? यह वो आध्यात्मिक मार्ग है जिसे हम सभी लंबे समय तक अनदेखा करते रहते हैं। हमें लगता है कि यह सब बुजुर्गों का काम है लेकिन अध्यात्म किसी उम्र के बंधन में नहीं बंधा है।

अध्यात्म की राहः- मेडिटेशन और अध्यात्म की राह हमें शांति की ओर मोड़ देती है जहां उस परम शक्ति से मिलन का रास्ता बहुत आसान हो जाता है। हम सभी कहीं ना कहीं, किसी ना किसी रूप में उस परम शक्ति से जुड़े हुए हैं। हम सभी के अंदर प्रकट करने की शक्ति है। ये हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम उस शक्ति को कैसे जागृत करें जिससे कि हम उस ऊर्जा तक पहुंच सकें, जहां तक पहुंचना वर्तमान में लगभग मुश्किल सा हो गया है। हमें उस राह को पकड़ना है जहां हम जीवन के साथ ऐसी तारतम्यता बैठाएं जहां हम मुश्किलों को भी हंसकर जी सकें।

कैसे जानें ईश्वरीय शक्ति के बारे में:- दुनिया में कई लोग ऐसे हैं जो अपने जीवन को इस दिशा में ला चुके हैं और उसका आनंद भी ले रहे हैं। हो सकता है आप भी अंदर से आध्यात्मिक हों लेकिन उसका ज्ञान ना होने के कारण वैसा महसूस नहीं कर पा रहे हैं। आज मैं आपको कुछ ऐसे संकेत बताऊंगा जिससे आप जान सकेंगे कि आपके और उस परम शक्ति के बीच एक संपर्क स्थापित हो चुका है और यह संपर्क जल्द ही आपको जीवन के नए आयामों से परिचित करवाएगा।

जुड़ावः- क्या ऐसा आपके साथ हुआ है कि आपको मदद की जरूरत है और अचानक से आपके पास मदद पहुंच जाए ? दुनिया के कई लोगों ने अपने इस तरह के अनुभव शेयर किए हैं जहां वो बुरी तरह किसी मुसीबत में फंसे हैं और एक अप्रत्याशित मदद उनके लिए हाजिर हो गई। ये मदद वो ऊर्जा है जो आपको उस अपार शक्ति से जुड़ने पर ही प्राप्त होती है। आध्यात्मिक तौर पर मजबूत व्यक्ति के साथ अक्सर होता है क्योंकि उनके आसपास की ऊर्जा उनके व्यक्तित्व से बदल जाती है। किसी के लिए यह जादू है तो किसी के लिए उनके कर्म लेकिन कई लोग इसे परम शक्ति की कृपा मानते हैं जो बहुत कम लोगों को ही प्राप्त होती है।

इंद्रधनुषः- हर किसी ने बचपन से लेकर अभी तक कहीं ना कहीं इंद्रधनुष यानि रेनबो जरूर देखा होगा। ये बहुत सामान्य सी बात है लेकिन याद करिए आपने आखिरी बार इसे कब नोटिस किया और बचपन की तरह ध्यान से इसमें पाए जाने वाले रंगों को कब देखा ? हम अपनी व्यस्त जिंदगी के बीच कुदरत के कई खज़ानों को देख नहीं पाते लेकिन जो लोग उस डिवाइन पावर से जुड़े होते हैं वह प्रकृति में मौजूद छोटी से छोटी चीज को भी नोटिस कर लेते हैं। जब आप उस परम शक्ति से जुड़ जाते हैं तो आपके लिए आपके शरीर के चक्रों जैसी प्रकृति में पाई जाने वाली हर चीज ज्यादा जीवंत हो उठती है।

नंबरों का दोहरावः- जब कोई व्यक्ति अध्यात्म के साथ गहराई से जुड़ जाता है तो उसे अलग-अलग तरह के अनुभव होते हैं। ऐसे लोगों को अक्सर हर जगह एक ही नंबर दिखाई देते हैं। ये कोई जादू नहीं है यह हकीकत है। हो सकता है हर बार घड़ी देखने पर आपको १२ ही बजते दिखते हों। या फिर ११.११, ६.६ या १०.१०। ऐसे नंबर बार-बार दिखाई देना इस बात का संकेत है कि आपके अंदर वो आध्यात्मिक शक्ति जागृत हो रही है।

धन की प्राप्तिः- जैसा कि सभी को पता है कि धन भी एक प्रकार की ऊर्जा है जो कि निरंतर बदलती रहती है। सकारात्मक लोगों के पास यह ऊर्जा तेजी से पहुंचती है जिस कारण उन्हें धन लाभ होता है, वहीं नकारात्मक लोगों के पास यह ऊर्जा ज्यादा देर तक नहीं टिकती। हम बहुत मेहनत के साथ कोई कार्य करें जिसके फल के रूप में हमें ढेर सारा धन प्राप्त हो ऐसा बहुत कम होता है लेकिन दुनिया में ऐसे कई लोग मौजूद हैं जिन्हें हर बार उनकी मेहनत का ईनाम मिलता है वो भी धन के रूप में।

ये वही लोग हैं जिनके ऊपर ईश्वरीय कृपा होती है। ब्रह्माण्ड की शक्तियां उन्हें धन की ऊर्जा से जोड़ देती हैं जिसके फलस्वरूप उन्हें कई बार अप्रत्याशित रूप से धन मिलने लगता है। ऐसा नहीं है कि यह धन उनकी मेहनत का नहीं है। ये मैं इसलिए कह रहा हूँ कि आपमें से ही कई लोग ऐसे होंगे जिन्हें उनके काम के मुताबिक वेतन नहीं मिलता होगा।

नया सवेराः- अध्यात्म से जुड़ने के बाद यह सबसे कठिन चरण होता है जब आप पुराना सब कुछ छोड़कर नए के साथ जुड़ते हैं। फिर वह चाहें आपके दोस्त हों, रिश्ते या फिर आसपास मौजूद कोई भी वस्तु। जब हम ईश्वर से जुड़ते हैं तब वह सब कुछ अपने आप छूट जाता है जिसके लिए हम बने ही नहीं होते हैं या जो उस तस्वीर में नहीं होता जिस तस्वीर में हम होते हैं।

www.navgrahvatika.com

आयुर्वेदः-

विजया

विजया का प्रचलित नाम भांग (भंग) है। इसका एक व्यंगोक्ति नाम शिवप्रिया भी है- क्यों कि शिव को विशेष प्रिय है। शिवाराधन में अन्य पूजनोपचारों के साथ विल्वपत्र और विजया अनिवार्य है। विल्वपत्र का प्रयोग तो अन्य देवों के पूजन में भी होता है, किन्तु विजया एकमात्र शिवप्रिया ही है। प्रायः सर्व सुलभ क्षुप जातीय इस वनस्पति के रोपण हेतु सरकारी आज्ञापत्र की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके सर्वांग में मादकता गुण है। वैसे जंगली वूटियों की तरह प्रायः जहां-तहां अवांछित रुप से उग भी जाता है। भांग की पत्तियों को पीस कर गोली बनाकर या शर्बत के रुप में लोग पीते हैं। नशे के विभिन्न पदार्थों में विजया का नशा अपने आप में अनूठा ही है। वैसे यह शाही घरानों से जुड़ा रहा है। विजया का प्रयोग आयुर्वेद के विभिन्न औषधियों में होता है।इसके कुछ तान्त्रिक प्रयोग भी हैं, जो खासकर स्वास्थ्य से ही सम्बंधित हैं। भांग को एक खास विधि से खास समय में प्रयोग करने से गुण में काफी वृद्धि हो जाती है। प्रयोग पूर्व की विधि अन्याय वनस्पतियों जैसी ही है।

बाजार से यथेष्ठ मात्रा में भांग की सूखी पत्तियाँ खरीद लायें। उचित होगा कि यह कार्य श्रावण महीने में किसी सोमवार को किया जाय। झाड़-पोंछ कर स्वच्छ करने के बाद नवीन लाल वस्त्र का आसन देकर स्थापित करें और कम से कम ग्यारह हजार शिव पंचाक्षर मंत्र का जप करें। जप के पूर्व शिव की पंचोपचार पूजन अवश्य कर लें। साथ ही भांग की पोटली की भी पूजा करें- उसमें शिव को आवाहित करके। इस प्रकार प्रयोग के लिए बूटी तैयार हो गयी।

भांग के प्रयोग के लिए कुछ सहयोगी घटक भी अनिवार्य हैं, यथा- सौंफ, कागजी बादाम, कालीमिर्च, छोटी इलाइची, गुलाब की

पंखुड़ियां, केसर, दूध और शक्कर (मिश्री)। भांग की मात्रा (सामान्य जन के लिए) नित्य एक ग्राम से अधिक नहीं हो। वैसे नशे के आदि लोग तो पांच से दश ग्राम तक सेवन कर लेते हैं। पर यह उचित नहीं है। समुचित मात्रा में साधित विजया का नियमित प्रयोग मेधा शक्ति को बढ़ाने में काफी कारगर है। साल के बारह महीनों में विजया प्रयोग के लिए अलग-अलग अनुपान का महत्व तन्त्रात्मक आयुर्वेद में बतलाया गया है, जो निम्नलिखित हैं-

चैत्रः- ऊपर निर्दिष्ट घटकों के साथ प्रयोग करें। चिन्तन, धारणा, स्मरण-शक्ति को विजया से काफी बल मिलता है।

वैशाखः- ऊपर निर्दिष्ट घटकों के साथ प्रयोग करें। चिन्तन, धारणा, स्मरण-शक्ति के लिए गुणकारी है। स्नायु संस्थान के लिए अति उत्तम है।

ज्येष्ठः- इस महीने में उक्त घटकों के साथ विजया-पेय तैयार कर, सूर्योदय के जितने समीप ग्रहण कर सके, उतना लाभदायी है- शारीरिक बल-कान्ति-सौन्दर्य के लिए।

आषाढ़ः- इस महीने में विजया का नियमित सेवन केश-कल्प का कार्य करता है। प्रयोग की विधि बदल जाती है। उक्त महीनों की तरह पेय के रुप में न लेकर, चूर्ण के रुप में लेना चाहिए साथ में चित्रक का चूर्ण भी समान मात्रा में मिलाकर धारोष्ण दूध या सामान्य गरम दूध के साथ लेना चाहिए।

श्रावणः- इस महीने में विजया-चूर्ण के साथ शिवलिंगी-बीज के चूर्ण को मिलाकर दूध या उक्त घटक के साथ पेय के रुप में सेवन करने से बल-वीर्य-कान्ति की वृद्धि होती है।

भाद्रपदः- इस महीने में विजया-चूर्ण को रुदवन्ती-फल-चूर्ण के साथ समान मात्रा में मिलाकर दूध के साथ सेवन करने से मानसिक अशान्ति दूर होकर चित्त की एकाग्रता में वृद्धि होती है। सुविधा के लिए इसे गोली बनाकर भी उपयोग किया जा सकता है।

आश्विनः- इस महीने में विजया के पत्तों को समान मात्रा में ज्योतिष्मति (मालकांगनी) के साथ चूर्ण बनाकर दुग्ध के साथ सेवन करने से तेजबल की वृद्धि होती है।

कार्तिकः- इस महीने में विजया के पत्तों को समान मात्रा में ज्योतिष्मति (मालकांगनी) के साथ चूर्ण बनाकर बकरी के दूध के साथ सेवन करने से तेजबल की वृद्धि होती है। यानी अन्य बातें वही रही जो आश्विन की थी, किन्तु अनुपान बदल गया। ध्यातव्य है कि आयुर्वेद में अनुपान-भेद से एक ही औषधि अनेक रोगों में प्रयुक्त होती है। तन्त्र में भी क्रिया भेद से प्रयोग और प्रभाव में अन्तर हो जाता है।

मार्गशीषः- इस महीने में विजया-चूर्ण को घी और मिश्री के साथ सेवन करने से समस्त नेत्र रोगों में लाभ होता है। स्वस्थ व्यक्ति भी नेत्र-ज्योति की रक्षा के लिए इस प्रयोग को कर सकते हैं।

पौषः- इस महीने में विजया-चूर्ण को काले तिल के चूर्ण के साथ सेवन करने से नेत्र-ज्योति बढ़ती है। अनुपान गरम जल का होना चाहिए। कुछ लोग दूध का अनुपान सही बताते हैं, किन्तु मेरे विचार से काले तिल के साथ दूध सर्वथा वर्जित होना चाहिए। इससे एक लाभ तो हो जायेगा, पर अनेक हानि के द्वार भी खुलेंगे। अतः इस निषेध का ध्यान रखना जरुरी है।

माघः- इस महीने में विजया-चूर्ण को नागरमोथा-चूर्ण के साथ मिलाकर दूध या गरम जल से सेवन करना चाहिए। इससे शरीर का भार बढ़ता है (मोटे लोग इसका प्रयोग न करें)।

फाल्गुनः- इस महीने में विजया को चार गुने आंवले के साथ मिलाकर चूर्ण बनाकर, गरम जल के साथ सेवन करने से अद्भुत स्फूर्ति आती है। वात, रक्त, नाड़ी सभी संस्थानों का शोधन होकर शरीर कान्ति-शक्तिवान होता है।

इस प्रकार साल के बारह महीनों में अलग-अलग घटकों और अनुपान भेद से विजया कल्प का प्रयोग किया जा सकता है।

youtube. kailashmishra, govardhan

वैवाहिक जीवन के अशुभ योग

यदि सप्तमेश शुभ युक्त न होकर षष्ठ, अष्टम या द्वादश भावस्थ हो और नीच या अस्त हो, तो जातक या जातका के विवाह में बाधा आती है।

यदि षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादशेश सप्तम भाव में विराजमान हो, उस पर किसी ग्रह की शुभ दृष्टि न हो या किसी ग्रह से उसका शुभ योग न हो, तो वैवाहिक सुख में बाधा आती है। सप्तम भाव में क्रूर ग्रह हो, सप्तमेश पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तथा द्वादश भाव में भी क्रूर ग्रह हो, तो वैवाहिक सुख में बाधा आती है। सप्तमेश व कारक शुक्र बलवान हो, तो जातक को वियोग दुख भोगना पड़ता है।

यदि शुक्र सप्तमेश हो (मेष या वृश्चिक लग्न) और पाप ग्रहों के साथ अथवा उनसे दृष्ट हो, या शुक्र नीच व शत्रु नवांश का या षष्ठांश में हो, तो जातक स्त्री कठोर चित्त वाली, कुमार्गगामिनी और कुलटा होती है। फलतः उसका वैवाहिक जीवन नारकीय हो जाता है।

यदि शनि सप्तमेश हो, पाप ग्रहों के साथ व नीच नवांश में हो अथवा नीच राशिस्थ हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हो, तो जीवन साथी के दुष्ट स्वभाव के कारण वैवाहिक जीवन क्लेशमय होता है।

राहु अथवा केतु सप्तम भाव में हो व उसकी क्रूर ग्रहों से युति बनती हो या उस पर पाप दृष्टि हो, तो वैवाहिक जीवन अक्सर तनावपूर्ण रहता है। यदि सप्तमेश निर्बल हो और भाव ६, ८, १२ में स्थित हो तथा कारक शुक्र कमजोर हो, तो जीवन साथी की निम्न सोच के कारण वैवाहिक जीवन क्लेशमय रहता है।

सूर्य लग्न में व स्वगृही शनि सप्तम भाव में विराजमान हो, तो विवाह में बाधा आती आती है या विवाह विलंब से होता है।

सप्तमेश वक्री हो व शनि की दृष्टि सप्तमेश व सप्तम भाव पर पड़ती हो, तो विवाह में विलंब होता है।

सप्तम भाव व सप्तमेश पाप कर्तरी योग में हो, तो विवाह में बाधा आती है।

शुक्र शत्रुराशि में स्थित हो और सप्तमेश निर्बल हो, तो विवाह विलंब से होता है।

शनि सूर्य या चंद्र से युत या दृष्ट हो, लग्न या सप्तम भाव में स्थित हो, सप्तमेश कमजोर हो, तो विवाह में बाधा आती है।

शुक्र कर्क या सिंह राशि में स्थित होकर सूर्य और चंद्र के मध्य हो और शनि की दृष्टि शुक्र पर हो, तो विवाह नहीं होता है।

शनि की सूर्य या चंद्र पर दृष्टि हो, शुक्र शनि की राशि या नक्षत्र में में हो और लग्नेश तथा सप्तमेश निर्बल हों, तो विवाह में बाधा निश्चित रूप से आती है।

भजन

कृपा करो हम पर श्यामसुन्दर,
ऐ भक्तवत्सल कहाने वाले।
तुम्हीं हो धनुशर चलाने वाले,
तुम्ही हो मुरली बजाने वाले।।कृपा करो०
तुम्हें पुकारा था द्रोपदी ने,
बचाया प्रहलाद को था तुम्हींने।
तुम्हीं हो खम्भे में आने वाले,
तुम्हीं हो साढ़ी बढ़ाने वाले।।कृपा करो०
तुम्हीं ने ब्रज से प्रलय हटाया,
समुद्र में सेतु भी बनाया।
ऐ जल पर पत्थर तैराने वाले,
ऐ नख पर गिरिवर उठाने वाले।।कृपा करो०
ऐ कौशिला सुत यशोदा नन्दन,
अधीन दुःख बिन्दु के निकन्दन।
छुड़ाओ मेरे भी जग के बंधन,
ऐ जग के बंधन छुड़ाने वाले।।कृपा करो०

आपका संकट निवारण एवं संतुष्टि ही हमारा लक्ष्य !

जब शुरू होते हैं अच्छे या बुरे दिन तो बदलने लगता है हाथ कर रंग

अगर आपके हाथ रंग बदल रहा है तो इसे हल्के में न लें। ये कोई साधारण इशारा नहीं है। ये इशारा आपको बड़ी बीमारी से बचा सकता है क्योंकि अपना हाथ ध्यान से देखने में आपको ये पता चल जाएगा कि आपको कैसी बीमारी होने वाली है।

१. अगर आपकी हथेली गुलाबी और चित्तीदार है तो हस्त रेखा विज्ञान के अनुसार आपका स्वास्थ्य सामान्य है और आप आशावादी और खुश मिज़ाज व्यक्ति हैं।

२. अगर आपकी हथेली का रंग धीरे-धीरे हल्का लाल होता जा रहा है तो यह इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में आप ब्लडप्रेशर की समस्या से परेशान हो सकते हैं।

३. हथेली अगर काफी लाल दिखाई देती है तो आपका स्वभाव बहुत ही उग्र हो सकता है आप क्रोध में सीमा से बाहर जा सकते हैं अर्थात् मारपीट भी कर सकते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से इस प्रकार की हथेली होने पर आप मिर्गी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

लाल रंग की हथेली आपके स्वभाव के बारें में भी बताती है कि आप अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं एवं छोटी छोटी बातों पर आवेश में आ जाते हैं।

४. अगर हथेली का रंग धीरे-धीरे पीला होता जा रहा है तो आपकी हथेली का रंग कहता है कि आपके शरीर में रक्त की कमी होने के रोग हो सकते हैं। संभव है कि आप एनिमिया के शिकार हो सकते हैं। हथेली का रंग पीला है तो यह संकेत है कि आप रोग ग्रस्त हैं। आपके शरीर में पित्तदोष है। हाथ का रंग आपके स्वभाव के बारे में बताता है कि आप स्वार्थी हैं साथ ही आपका स्वभाव चिड़चिड़ा है।

५. हथेली का रंग नीला पड़ने लग गया है तो आप यह समझ सकते हैं कि आपके शरीर में रक्त संचार की गति धीमी है और हो सकता है कि आपके अंदर आलस्य की भावना हो।

६. हथेली का रंग गुलाबी है तो स्वास्थ्य एवं स्वभाव दोनों ही दृष्टि से आप बहुत अच्छे हैं। हथेली का ऐसा रंग अत्यंत उत्तम है।

शेष पृष्ठ....६. से आगे......

चाहिए। चाहें हालात अच्छे हों या बुरे, अपने दिल की आवाज को कभी अनसुना ना करें, यही हम सबको हमेशा सही रास्ता दिखाएगा।

भविष्य, हमारे भूतकालीन कार्यों का परिणाम ही है। आज हम हमारे बीते हुए कल के कर्मों का फल वहन कर रहे हैं। परन्तु हम अच्छे कार्य करके, अच्छा सोचकर तथा मानवता की सेवा करके, बुरे कर्मों के प्रभाव को परिवर्तित कर सकते हैं।

अच्छे कार्य करते रहिए और दूसरों से शुभकामनाएँ प्राप्त करते रहिए, यही कर्म के नियम का समाधान है।

मनुष्य को फल की इच्छा किए बगैर कर्म करने चाहिए!

जीवन के हर संकट में रमल ज्योतिष से कारण.
श्री नृःसिंह भगवान के द्वारा समाधान.

हमारे यहाँ हस्त लिखित जन्म-पत्र फलादेश सहित तैयार किये जाते हैं। पं० आकाश मिश्रा
09557895756
Web- www.navgrahvatika.com

नवग्रह वाटिका के प्राँगढ़ में आपनी समस्त समस्याओं की पूजा का लाभ अब आप वीडियो के द्वारा करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं!
09760689730. .... .08445289000

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह

श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान

मंदिर श्री नृःसिंह भगवान, चकलेश्वर रोड, गोवर्धन द्वारा

पराविज्ञान की सहायता से रमल ज्योतिष पर निजी शोध की जनकल्याणार्थ प्रस्तुति.

......विश्व में प्रथमबार स्थापित......

'श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड'

(असाध्य बीमारियों को नष्ट करने वाला जल, के बाद अब जनकल्याणार्थ उपयोग हेतु)

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड के जल एवं वेदोक्त नवग्रह वाटिका की समिधाओं से मिश्रित

श्री गिरिराज ज्योति

नवग्रह चंदन

(नवग्रहों के शान्तार्थ)

वेदोक्त नवग्रह वाटिका में प्राण-प्रतिष्ठित दक्षिणावर्ती शंख !

श्री नरसिंह जय जय नरसिंह श्री नृःसिंह कवच से सम्पुट एवं श्री नवग्रह यंत्र सहित ऋण मुक्ति यंत्र

श्री नृःसिंह शक्ति कुण्ड के जल से अभिमंत्रित, श्री नृःसिंह कवच एवं श्री नवग्रह मंत्रों से वेदोक्त नवग्रह वाटिका में प्राण-प्रतिष्ठित !

श्री नृःसिंह नवग्रह कवच

नवग्रह लाकेट

सर्व संकट निवारणार्थ, ग्रहदोष, देवदोष, पितृदोष, परकृत बाधा, व्यापार वृद्धि, ऋणमुक्ति, नवग्रह शान्ति आदि-आदि लौकिक एवं भौतिक समस्याओं के लिए!

सभी राशियों के प्राण-प्रतिष्ठित रत्न-उपरत्न

प्राप्ति स्थान **श्री लक्ष्मी नृःसिंह नवग्रह वाटिका**

ykdef.k fogkj] jk/kkd|.M ifjØek ekx] xko/ku ¼eFkjk½

Ph- 09760689730
08445289000

Email: navgrahvatika@gmail.com
Web- www.navgrahvatika.com

श्री गिरिराज महाराज की जय

रमल ज्योतिष द्वारा

भूत, भविष्य वर्तमान सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर एवं समस्त समस्याओं का समाधान

केवल फोन पर

समय दोपहर 12:00 से शायं 05:00 तक

Mob.- 09412226020 / 09760689730

शाखा-कार्यालय

श्री गिरिराज ज्योति पत्रिका

अशोक कैसिट सैंटर

१८३-१८४, प्रथम तल,

विकास बाजार, मथुरा।

अशोक कुमार गुप्ता (सहसंपादक)

Mob.- 09412281034

श्री नृःसिंह स्तुति

हे नृःसिंह हम तो बने तुम्हारे।
अब मर्जी रही तुम्हारी बनो न बनो हमारे।। हे नृःसिंह।।
जाँति–पाँति, कुल, धर्म, धन सब कुछ तुम पर वारे।
जैसा चाहो नाच नचा लो, हर प्रकार हैं तुम्हारे।। हे नृःसिंह।।
सुनते थे गज, गीध, अजामिल, प्रह्लाद भक्त उवारे।
पर ना जाने मेरे कारण क्यूँ बन्द कर लिये दरबाजे।। हे नृःसिंह।।
छोड़ गये सब स्वारथ साथी अपनी राह सिधारे।
दीन–अधीन, मलीन–हीन के अब हो तुम्हीं सहारे।। हे नृःसिंह।।
पूर्व कर्म कृत कुटिलं प्रकृति वश छोड़े साधन सारे।
चढ़ा रहे हैं चरणों में अश्रु बूंद फुहारे।। हे नृःसिंह।।
हे नृःसिंह हम तो बने तुम्हारे।
अब मर्जी रही तुम्हारी बनो न बनो हमारे।। हे नृःसिंह।।
श्री नृःसिंह शरणं मम् !

RNI NO- UPHIN-1999/975 PRINTED BOOK- 121/1

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक :- पं. कैलाश चन्द्र मिश्रा संपादक श्री नृःसिंह रमल ज्योतिष शोध संस्थान, श्री नृःसिंह मंदिर चकलेश्वर रोड, गोवर्धन-२८१५०२ (मथुरा) उ.प्र. के लिए आर. के. प्रिंटर्स, १६ डी, गोविन्द नगर मथुरा द्वारा मुद्रित।